भारतीय मजदूर संघ, उ. प्र.

कार्यकर्ता

किसी भी संगठन का आधार कार्यकर्ता होता है। भगवान ने गीता में कहा है–

अधिष्ठानम् तथा कर्ता, करणम् च पृथग्विद्यम्।
विविधाश्च प्रथक्चेष्टा, देवम् चैवात्र पंचमम्।।

माने सिद्धान्तों को प्रत्यक्ष साकार करने और ध्येय तक पहुँचने के लिए कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। इन कार्यकर्ताओं के पास संगठन अथवा संस्था के कार्य संचालन हेतु आवश्यक साधन हों और सभी मिल जुलकर अपने लक्ष्य तक पहुँचने एवं अपने सिद्धान्तों को साकार रूप देने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की अनेकानेक चेष्टायें व प्रयत्न करते हों तभी ऐसे कार्यकर्ताओं की भाग्य भी सहायता करता है और उनकी सफलता के लिए भगवान भी आशीर्वाद देते हैं।

अब कार्यकर्ता माने क्या ? तो सीधा-सा उत्तर है कार्य करे सो कार्यकर्ता। कार्यकर्ता के आधार पर ही हम लोग अनेक प्रकार के कार्य जैसे बैठकें, सभायें, अधिवेशन, आन्दोलन, द्वार सभायें (गेट मीटिंग) धरना अथवा प्रदर्शन आदि करते-करते अपने संगठन की संख्यात्मक एवं गुणात्मक वृध्दि करने में सफल हो पाते हैं और हर बार के कार्यक्रमों की योजना की चेष्टाओं के प्रयास के फलस्वरूप हमारी पूँजी माने कार्यकर्ताओं की संख्या एवं गुणवत्ता में वृध्दि होती है। फलस्वरूप हमारे आदर्शवाद का क्षेत्र व्यापक से व्यापकतर होता चला जाता है। अतएव हर बार विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए हमारा प्रयास एवं लक्ष्य यही रहता है कि आदर्शवादी कार्यकर्ताओं की संख्या और उनकी गुणवत्ता में हमेशा वृध्दि होती रहे।

अब जब हम ध्येय, सिध्दान्त और आदर्शवाद की बात करते हैं तो यह भी स्पष्ट चित्र अपने सामने होना ही चाहिए कि आखिर हमारा लक्ष्य क्या है ? अन्यथा फिर कार्यकर्ता, अपने अन्तर्गत गुणों का संवर्धन किस लिए करेंगे? और उनके आदर्शवाद तक पहुँचने के लिए कौन-सा लक्ष्य होगा ? महाराजा रन्तिदेव का एक नीति वाक्य है–

न त्वहं कामऐ राज्यं, न स्वर्गम् न च पुनर्भवम्।
कामऐ दुःख तप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

माने, न मुझे राज्य चाहिए, न मुझे स्वर्ग चाहिए, मुझको तो पुनः मनुष्य जन्म लेने की इच्छा भी नहीं है। मैं तो केवल दुःखी लोगों के दुःखों को दूर करने की लिए जीना चाहता हूँ।

और इसी आधार पर भारतीय मजदूर संघ ने भी कहा है कि–शोषित, पीड़ित, दलित जनों का भाग्य बनाने के लिए हमारा यह जीवन है। हमारी यह साधना है। 'अन्त्योदय' माने अन्तिम भूखे, दरिद्र व दुःखी व्यक्ति की दरिद्रता को दूर करने का संकल्प हमने लिया हुआ है। हमने कहा भी है कि मजदूर, उद्योग एवं राष्ट्र का समानुपातिक आर्थिक विकास होता रहे। सभी को करने के लिए काम मिले, सम्मान मिले। कोई भूखा न सोये, भीख न माँगे एवं अपने देश से आर्थिक गुलामी विदा ले ताकि राष्ट्र का आर्थिक विकास हो और अपने देश में आर्थिक

आजादी आ सके। इस सभी के लिए हमारा यह कार्य माने भारतीय मजदूर संघ है और इस कार्य की पूर्ति हेतु योग्य, सक्षम, ध्येयवादी एवं आदर्शवादी कार्यकर्ताओं की संख्या दिनों-दिन बढ़ाते चलते रहना है।

अब इतने बड़े संकल्प को साकार करने के लिए कमजोर, बुजदिल, नाकारा अथवा निम्न विचारों के तुच्छ लोगों से यह कार्य और कार्य की साधना सधने वाली नहीं है। अतएव नित्य की साधना करते-करते कार्यकर्ता इतना ईमानदार एवं प्रामाणिक बने कि उसमें पद, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि एवं अवसरवादिता की थोड़ी-सी आकांक्षा भी न रह जाये। पुत्रेषणा, वित्तेषणा एवं लोकेषणा माने परिवार, धन एवं लोक यश की आकांक्षा से दूर केवल अपने ध्येय की कल्पना को साकार करने के लिए जीने वाला ही एक योग्य एवं श्रेष्ठ कार्यकर्ता होता है। वह पैसे का लालची बनकर अपने आत्मसम्मान को पतित नहीं करता है। कार्यकर्ता में सभी प्रकार की शुचिता होनी चाहिए। शुचिता, वाणी की, व्यवहार की, पद की, पैसे के आदान-प्रदान की माने सभी प्रकार के व्यवहार की बाहरी एवं आन्तरिक शुचिता से सम्पन्न पवित्र, ओजस्वी, स्वाभिमानी, योग्य, व्यवहार कुशल एवं चतुर कार्यकर्ता को होना चाहिए।

यह भी कहा गया है कि कार्यकर्ता समर्पित, प्रामाणिक, कृत्तत्वान, ईमानदार, जिम्मेदार और समझदार हो। समझदारी का सामान्य अर्थ है कि वह जो कार्य सम्पन्न करता है उसकी पर्याप्त समझ कार्यकर्ता को हो। लेकिन फिर भी इस समझदारी का व्यापक अर्थ हमें जरूर समझना चाहिए। समझदारी का अर्थ होता है Understanding माने, कार्यकर्ता को अपनी, अपने कार्य की, कार्य के विस्तार की, लक्ष्य की, ध्येय एवं सिद्धान्तों की अन्डरस्टेडिंग होनी चाहिए। उसको आपसी व्यवहार की कुशल समझदारी हो। आपस में मनमुटाव न हो सके, कड़ुवाहट एवं आपसी टकराहट पैदा होने के क्षण जीवन में कभी न आने पावें, इसके लिए कार्यकर्ताओं से व्यवहार करते समय उनके मन की और तदनुरूप अपने व्यवहार एवं वाणी का उपयोग करने की पर्याप्त समझ, जिसको आपसी अन्डरस्टेडिंग कहना चाहिए, वह होना एक अनिवार्य शर्त है।

और इसी आधार पर कहा गया है—

आमन्त्रम् अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलनां औषधिम्।
अयोग्यो पुरूषोनास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभम्।।

माने कोई अक्षर ऐसा नहीं है जिसमें मंत्र की शक्ति न हो, कोई जड़ एवं वनस्पति ऐसी नहीं है, जिसमें औषधि के तत्व न हों। इसी प्रकार से कोई भी पुरुष अयोग्य नहीं होता है। अक्षर, वनस्पति एवं व्यक्तियों की उचित योजना करने वाले का मिलना ही कठिन होता है।

भगवान विष्णु के लिए विष्णु सहस्त्रनामस्तोत्र में कहा गया है : ''अमानी मान दो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक।'' तात्पर्य यह है कि जो सम्पूर्ण संसार में लोकस्वामी बनकर विजय एवं सम्मान चाहता है ऐसे कार्यकर्ता को अहंकार शून्य होना चाहिए और सभी को सम्मान देने का उसका स्वभाव होना चाहिए। व्यवहार एवं स्वभाव सभी को भरपूर सम्मान देने का लेकिन स्वयं मान पाने की इच्छा से बहुत दूर ऐसा व्यक्ति अपने संगठन का कुशल संचालन तो करता ही है इसके साथ ही साथ स्वीकार किये गये अपने ध्येय को साकार मूर्तिमन्त स्वरूप प्रदान कराने के लिए योग्य एवं कुशल कार्यकर्ताओं का संच माने ''मास्टर माइन्ड ग्रुप'' खड़ा करने में भी सफल होता है।

अर्जुन को योग्य कार्यकर्ता बनने का निर्देश देते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो, गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

गीता के इस श्लोक के अनुकूल आचरण करने वाले कार्यकर्ता को अपने लिए अपेक्षायें नहीं करना चाहिए। सदा सावधान, चतुर, पवित्र आचरण करने वाला तथा अपनी स्वयं की आवश्यकताओं के प्रति उदासीन और अपने सुख–दुःख की परवाह न करने वाला तथा प्राप्त होने वाली सभी सफलता अथवा विफलता के फल से अपने मन हो प्राप्त होने वाली प्रसन्नता अथवा क्लेश से मुक्त होना चाहिए। ऐसे श्रेष्ठ कार्यकर्ता भगवान को भी अति प्रिय होते हैं।

ऐसा स्वभाव प्राप्त करने के लिए कार्य के प्रति, अपने ध्येय एवं सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ निश्चय एवं पूर्ण समर्पण का भाव होना चाहिए। माने जो पागल है जिसमें जरा कुछ पागलपन है उसको हमेशा "**इदं न मम्**" की तरह "मैं नहीं तू ही" का ही भाव रहता है और इसलिए हम कहते हैं कि We are only for B.M.S. and not for only our Union. इसे थोड़ा समझ लें तो अच्छा रहेगा। जैसे इमली का वृक्ष होता है, घना, खूब लम्बा, चारों तरफ फैला हुआ, छाया और हरियाली देने वाला। इसके छोटे–छोटे पत्ते होते हैं, हरे–चमकीले, साफ–सुन्दर मन को मोहित करने वाले और अपनी ही प्रसन्नता में हर समय झूमते रहने वाले। यही छोटे–छोटे से इमली के पत्ते, इमली के वृक्ष के ऊपर चोटी तक फैले रहते हैं, झूमते रहते हैं। परन्तु साथ ही इनको ही आँधियों के थपेड़े, सूर्य की गरम हवा, बरसात की बौछार माने सभी प्राकृतिक प्रकोप झेलने होते हैं, लेकिन फिर भी प्रसन्न। अब यदि इनको अहंकार हो जावे कि हमारी वजह से इमली के वृक्ष की छाया है, शीतलता है और अस्तित्व है तो फिर यह सब है तो लेकिन यदि इमली की एक शाखा काटकर वृक्ष से अलग कर दी जाये तब फिर इन झूमते इठलाते इमली के पत्तों को मुरझाने, मरने और पीले पड़कर झड़ने में कितना समय लगता है ? मात्र कुछ घण्टों में इनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है, क्यों ? क्योंकि वृक्ष से इनका सम्बन्ध समाप्त हो गया। वृक्ष की जड़ से जो पोषक जीवन तत्व मिल रहे थे–उनसे नाता टूट गया, इसलिए इठलाने की, झूमने की, गर्मी–धूप आदि झेलकर भी जीने की शक्ति समाप्त हो गई। ऐसे समय तब याद आता है यही बोधवाक्य, "मैं नहीं तू ही।"

एक दूसरा उदाहरण और–अंगीठी होती है और होते हैं उसमें खूब दहकते हुए लाल सुर्ख अंगारे। उनको कोयला कौन कहेगा भला ? दहकते हुए अंगारे को हाथ से छूने की कोई हिम्मत भी नहीं कर सकता है। यह तो निरा पागलपन होगा। लेकिन एक दहकते हुए अंगारे को आप चिमटे से पकड़कर अंगीठी से दूर अलग निकालकर रख दीजिए तो थोड़ी ही देर में क्या होगा ? अंगारे की दाहकता खत्म हो जायेगी और लाल सुर्ख अंगारे की सुन्दरता के स्थान पर वही काला, एकदम ठन्डा कोयला। क्यों भला ? तब फिर यही बोधवाक्य याद आयेगा, "मैं नहीं तू ही।"

लगे हाथ एक बात और ध्यान में रखने की है और वह यह कि हम कार्यकर्ता के नाते इमली की तरह छायादार बनें इसमें तो कोई आपत्ति नहीं है परन्तु कभी भी ऐसे वट वृक्ष न बन जावें कि जिसके नीचे कोई घास, कोई छोटा–सा पौधा जीवित ही न रहने पावे। वटवृक्ष है तो वह तो जियेगा, फलेगा, फूलेगा लेकिन अपने नीचे अन्य किसी को नहीं फलने–फूलने देगा।

तो हम ऐसे वटवृक्ष बनकर न रह जावें। हम अपने योग्य एवं सावधान व्यवहार से स्वयं तो प्रगति करेंगे ही लेकिन साथ ही दस अन्य कार्यकर्ताओं को भी अपने व्यवहार से योग्य मार्गदर्शन देते हुए आगे विकास की ओर बढ़ने का अवसर देते रहेंगे, इसका भी समुचित ध्यान रखने की आवश्यकता एवं जागरूकता जरूरी है।

संक्षेप में यदि कहें तो हम कहेंगे कि योग्य कार्यकर्ता जो अपने ध्येय के प्रति पूरी तरह से समर्पित है उसमें अदम्य उत्साह से परिपूर्ण अजेय शक्ति हो। वह शिष्टाचार, चरित्र एवं शील से परिपूर्ण हो। उसको अपने लक्ष्य का भरपूर ज्ञान हो, उसको कैसे प्राप्त करना है, इसकी जानकारी हो एवं लक्ष्य तक पहुँचने के लिए किसी भी विपरीत परिस्थिति जैसे मद, लोभ, मोह, लालच तथा अपार कष्ट आदि के सामने न झुकने वाला वीरव्रत से पूरित योग्य मन हो एवं जिस ध्येय को हमने अपने जीवन में एक बार स्वीकार कर लिया है उसके प्रति जीवन की अन्तिम श्वांस तक चलते रहने की अपूर्व निष्ठा हो, विश्वास हो तभी हम कृत्तत्ववान, प्रमाणिक एवं समर्पित कार्यकर्ता बन सकेंगे। लेकिन उपरोक्त क्षमता एवं गुणवत्ता रहते हुए भी यदि कार्यकर्ता के पास कार्य करने के लिए समय का अभाव रहा तो ...। माने Time devoting factor एक अपरिहार्य आवश्यकता है। यदि वह नहीं तो कुछ भी नहीं और यदि कार्य के प्रति समय देने की सिद्धता है तो फिर शेष गुण यदि न भी रहे तो भी धीरे-धीरे अपने ही आप प्रस्फुटित होते रहेंगे, यह एक सच्चाई है।

उदात्त एवं ऊंचे ध्येय को प्राप्त करने के लिए उपरोक्त आवश्यक कहे गये गुणों एवं स्वभाव से परिपूर्ण कार्यकर्ताओं की जरूरत होती है। ऐसे कार्यकर्ता कार्य करते-करते अपने अन्दर उपरोक्त गुणों का विकास करते हुए स्वयं में लोकसंग्रही हो जाते हैं। समाज में लोग उनके आचरण का, वाणी का और व्यवहार का अनुपालन करते हैं। ऐसे उदात्त लोकसंग्रही रहें अथवा न रहें लेकिन उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर लक्ष्य की ओर लोगों का काफिला श्रद्धा के साथ, उत्साह के साथ चल निकलता है और तब .... सच्चे लोकसंग्रही वृत्ति के साधक की साधना धन्य हो जाती है।

इस लेख के अन्त में हम पुनरपि भगवान श्रीकृष्ण की शरण में जाकर उन्होंने जो आशीष वचन सात्विक कार्यकर्ता के लिए कहे हैं, उनको उद्धृत करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं :

मुक्त संगोऽनहंवादी, धृत्युत्साह समन्वितः।
सिद्धिसिद्धयो, निर्विकारः कर्ता सात्विक उच्चयते।।

माने सभी प्रकार के मोह से मुक्त और अहंकार शून्य लेकिन फिर भी उत्साह एवं धृति से परिपूर्ण कार्यकर्ता जो सफलता अथवा विफलता से विचलित न होकर इन दोनों ही परिस्थिति में निर्विकार रह सकता है, वही सात्विक कार्यकर्ता कहा जाता है।

जय भारत

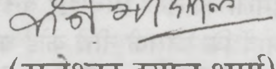

(राजेश्वर दयाल शर्मा)